राघवोल्लासमहाकाव्य का छन्दोविधान

मनीष कुमार त्रिपाठी

डॉ0 रामकिशोर झा जी के द्वारा 'राघवोल्लासमहाकाव्य' के सम्पादन से पूर्व इस महाकाव्य के विषय में विभिन्न इतिहास–ग्रन्थों में इसके विषय में संक्षिप्त सूचनायें प्राप्त होती हैं। जिनसे प्राप्त जानकारी तथा कतिपय अन्य साक्ष्यों के आधार पर यह महाकाव्य सोलहवीं शताब्दी का निर्णीत होता है। और भी अधिक रोचक तथ्य यह है कि इसकी रचना 'रामचरितमानस' के समानान्तर काल में तथा वाराणसी में ही हुई है। इस प्रकार इतने दीर्घावधि तक दुर्लभ इस महाकाव्य के प्रकाशन के पश्चात् इसके काव्यशास्त्रीय पहलुओं की चर्चा आवश्यक हो जाती है। प्रस्तुत शीर्षक के अन्तर्गत राघवोल्लास महाकाव्य के छन्दोविधान को दृष्टिगत रखकर विचार किया गया है।